4

क्रुद्ध विचार, घृणित बातें और हत्या

(मत्ती 5:21-26)

कुछ साल पहले मैंने होमिनी, ओक्लाहोमा के निकट कॉर्नर्स करेक्शनल सेंटर में प्रचार किया। मेरे सुनने वालों में कई लोग थे, जिन्हें हत्या का दोषी पाया गया था। यह दिलचस्प अनुभव था, पर कई रविवारों में मैं दर्जनों हत्यारों के सामने प्रचार करता हूं। कॉर्नर्स में मरे कई सुनने वालों ने हाथों के साथ हत्या की थी जबकि अन्य दलों में कई ऐसे होते हैं जिन्होंने मन से या बातों से हत्या की होती है। यीशु के अनुसार दूसरे लोग भी हत्या के उतने ही दोषी हैं, जितने कि पहले वाले:

> ''तुम सुन चुके हो, पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, हत्या न करना, और जो कोई हत्या करे, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहे वह महासभा में दण्ड के योग्य हेागा। और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख!' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। इस लिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरी और से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे। और जाकर पहिले अपने भाई से मेल कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उससे शीघ्र मेल कर ले; कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा। (मत्ती 5:21-26)''

पिछले पाठ में हमने उस भूमिका का अध्ययन किया था जिसे विलियम बार्कले ने ''नये नियम के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक कहा है''[1]: मत्ती 5:21-48. उस अध्ययन में हमने देखा कि यीशु ने कहा कि यह व्यवस्था को नाश करने नहीं, बल्कि पूरा करने के लिए आया। अन्त में उसने इसे पूरा कर दिया और हमारे पापों की खातिर क्रूस पर मरने के समय इसे बीच में से हटा दिया। परन्तु पहाड़ी उपदेश में उसने इसे विस्तार देते और गहरा अर्थ देते हुए पूरा कर दिया। आरिम्भक बातें कहने के बाद उसने उसके पूरा होने के चार-पांच उदाहरण दिए। इस पाठ में हम 21 से 24 आयतों के पहले उदाहरण का अध्ययन करेंगे। इन आयतों में यीशु ने क्रोधित होने और वे बातें कहने पर बात की, जो हमें नहीं कहनी चाहिए।

हमारे वचन पाठ में यह चर्चा भी होगी कि दूसरों के साथ न पाने और विशेषकर दूसरों को अपने कामों या बातों से ठेस पहुंचाने पर हमें क्या करना चाहिए। असहमतियों से निपटने के संसार के अपने ढंग हैं, पर वे यीशु के चेलों के ढंग नहीं हैं। मसीही व्यक्ति सब लोगों के साथ

चलने की कोशिश करता है, वे चाहे मसीही हों या गैर मसीही, विश्वासी हों या गैर विश्वासी, मित्र हों या शत्रु।

क्रोध का खतरा (5:21, 22)

क्रोध का अहसास (आयतें 21, 22क)

वचन का आरम्भ यीशु की बात ''तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था[2] कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी के दण्ड के योग्य होगा'' (आयत 21)। ''पूर्वकाल के लोग'' यीशु के सुनने वालों के पूर्वज थे।

मसीह के सुनने वालों में से लोगों ने एक बात जो सुनी थी, वह यह थी कि ''हत्या न करना।'' यह दस आज्ञाओं में छठी आज्ञा थी (निर्गमन 20:13; व्यवस्थाविवरण 5:17)। छठी आज्ञा मृत्युदण्ड से (देखें निर्गमन 21:12) या यहोवा के शत्रु के साथ लड़ने के लिए जाने से रोकती नहीं थी (देखें व्यवस्थाविवरण 7)। अनुवादित शब्द ''हत्या करना'' *phonelo* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''कत्ल करना'' है।[3] हत्या ''एक मनुष्य द्वारा किसी दूसरे को गैर कानूनी ढंग से [विशेषकर], मंसूबाबन्द ईर्ष्या से मार डालना है।''[4]

लोगों ने यह भी सुना हुआ था कि ''जो कोई हत्या करेगा, वह कचहरी के दण्ड के योग्य ठहरेगा।'' ''कचहरी'' शब्द *krisis* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''निर्णय, न्याय''[5] है (देखें KJV)। यीशु के मन में न्याय और फिर दण्ड के लिए स्थानीय यहूदी अदालत के सामने हत्यारे को लाए जाने का दृश्य था।[6] पुराने नियम की कोई आयत यह नहीं कहती कि ''जो कोई हत्या करेगा, वह कचहरी के दण्ड के योग्य होगा।'' यह बात सम्भवतया पुराने नियम में बताए गए कई वचनों के आधार पर सिखाए जाने वाले नियम पर आधारित होगी। व्यवस्था कहती थी कि हत्यारों को मार डाला जाए (देखें लैव्यव्यवस्था 24:17; गिनती 35:16-34) और संकेत देती थी। इस्राएली लोग इस और ऐसे अन्य मामलों में अदालत का प्रबन्ध बनाएं (देखें व्यवस्थाविवरण 16:18; 17:8, 9)। यीशु के समय तक फलस्तीन के हर कस्बे और नगर में हत्या के आरोपियों पर मुकदमा चलाने के लिए अधिकृत अदालत थी। स्पष्टतया यहूदी गुरु यही सिखा रहे थे कि हत्या के दोषी केवल वही लोग माने जाएं, जिन्होंने वास्तव में हत्या का कार्य किया हो।

''पर'' यीशु ने जोड़ दिया (यहां मुख्य वाक्यांश आता है) ''मैं तुम से यह कहता हूं ...'' (मत्ती 5:22क)। यूनानी धर्मशास्त्र में ''मैं'' पर ज़ोर दिया गया है। शास्त्री और फरीसी लोग जैसा उन्हें ठीक लगता है, अधिकारियों का हवाला देते थे, जैसे कई बार मूसा का। पर वे आमतौर पर बीते समय के गुरुओं का ही हवाला देते थे। परन्तु यीशु ने अपने ही अधिकार की बात की। उसके उपदेश के अन्त में ''भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई: क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था'' (7:28, 29; देखें मरकुस 1:22)।

यीशु ने अपने अधिकार के आधार पर क्या घोषणा की? पहले उसने कहा, ''जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे,[7] वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा'' (मत्ती 5:22ख)। यीशु द्वारा ''भाई'' (*adelphos*) शब्द इस्तेमाल करने पर उसके यहूदी श्रोताओं को अवश्य लगा होगा कि यह हमारा यहूदी भाई ही है। आज हम इसे निश्चय ही मसीही भाई मानेंगे। परन्तु इसकी प्रासंगिकता

यकीनन बड़ी है। आयत 24 में यीशु ने विरोधियों को शामिल किया, सो हमें भी हर उस व्यक्ति को शामिल करना चाहिए, जो हमारे सम्पर्क में आता है।

''क्रोध करेगा'' शब्द *orge* के क्रिया रूप से लिया गया है। ''क्रोध'' के लिए दो यूनानी शब्द *orge* और *thumos* हैं। *Thumos* ''एकदम से भड़कता है और झट से ठंडा होता जाता है,'' जबकि *orge* ''मन की बनी रहने वाली स्थिति ... आम तौर पर बदला लेने के विचार से।''[8] *orge* के बारे में बार्कले ने लिखा है:

> यह देर तक रहने वाला क्रोध है; यह ऐसे व्यक्ति का क्रोध है, जो अपने रोष को गर्म रखने के लिए इसे पालता है; या वह क्रोध है, जिस पर कोई व्यक्ति चिन्तन करता हुआ और जिसे वह मरने की अनुमति नहीं देगा। ... [यही] क्रोध है, जो भूलेगा नहीं, वही क्रोध शान्त होने से इनकार करता है, वही क्रोध बदला लेने की चाह करता है।[9]

बाइबल हर प्रकार के क्रोध को गलत नहीं ठहराती। परमेश्वर दुष्टों पर क्रोध करता है (देखें भजन संहिता 7:11; KJV)। यीशु ने कपटी फरीसियों को क्रोध से देखा (मरकुस 3:5)। सही क्रोध यानी ईश्वरीय क्रोध भी है, जो पाप, अत्याचार और बुराई पर क्रोध है। परमेश्वर ने भली मंशा के लिए हमारे अन्दर कुछ क्रोध रखा है। विलियम एवनस ने लिखा है, ''पाप पर क्रोधित होने में अक्षम व्यक्ति ... धार्मिकता के लिए प्रेम रखने में भी अक्षम है।''[10] परन्तु हम में से अधिकतम लोग जब क्रोधित होते हैं, तो क्रोध सच्चा क्रोध नहीं होता। इसके विपरीत यह किसी व्यक्तिगत बेकार या अपमान वास्तविक या काल्पनिक पर स्वार्थी क्रोध है। ऐसा होने के कारण बाइबल आमतौर पर क्रोध करने को गलत बताती है (देखें इफिसियों 4:31; कुलुस्सियों 3:8; याकूब 1:19, 20)।

मैं बताना चाहता हूं कि KJV में इस वचन में भिन्नता है। KJV में ''बिना कारण के ... क्रोध'' है। अनुवादित शब्द ''बिना कारण के'' का यूनानी शब्द कई प्राचीन दस्तावेजों में है, पर यह प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं मिलता।[11] मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया, क्योंकि मैंने वचन में कुछ लोगों को अपने क्रोध को उचित ठहराने के लिए ''बिना कारण के'' वाक्यांश का इस्तेमाल करते सुना था: ''यह कहता है, 'बिना कारण के' पर मेरे पास तो कारण था। मैं बताता हूं कि उसने मरे साथ किया!'' हम अपने आप को सही ठहराने और जो कुछ हम करते हैं उसका पर्याप्त ''कारण'' (अपने मनों में) बताने को तैयार रहते हैं और उसे ढूंढ सकते हैं। इस बात को समझें कि यीशु आम तौर पर किए जाने वाले क्रोध के खिलाफ चेतावनी नहीं दे रहा था।

यीशु ने कहा कि ''जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।'' ''कचहरी'' शब्द पिछली आयत में ''कचहरी'' शब्द की तरह *krisis* (''न्याय'') से लिया गया है। परन्तु स्पष्ट है कि मसीह शारीरिक न्याय से आत्मिक न्याय की बात करने लगा वाक्यांश कोई सांसारिक अदालत किसी को केवल क्रोध के कारण दोषी नहीं ठहरा सकती या ठहराएगी। यीशु कह रहा था कि *स्वर्गीय* अदालत में आदमी केवल किसी भाई की *हत्या* करने पर ही दोषी नहीं ठहरेगा, बल्कि भाई के साथ *क्रोध* करने पर भी दोषी ठहरेगा।

हम कल्पना कर सकते हैं कि यीशु के सुनने वालों में से यदि सब ने नहीं तो किसी न किसी की हत्या की होगी पर कइयों ने अपने मनों में घृणा जमा कर रखी होगी। यदि उन लोगों

पर जिनसे वे घृणा करते थे, कोई विपत्ति आ जाती है, जैसे कोई जंगली जानवर उन्हें खा जाता है, यदि विषैले सांप उन्हें काट लेते या उन पर बिजली गिर पड़ती, तो उन्हें कुछ दु:ख नहीं होना था।[12] उन्होंने यही मानना था कि उनके हाथ खून में रंगने से बच गए, क्योंकि उन्होंने छठी आज्ञा को नहीं तोड़ा, पर यीशु ने कहा कि ऐसा कुछ नहीं है। यीशु के एक प्रेरित ने लिखा है, ''जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता'' (1 यूहन्ना 3:15)। इसे ''मन में हत्या'' का नाम दिया जाता है।[13]

यीशु हत्या के पाप के पीछे मन के उस व्यवहार तक चला गया जो हत्या का कारण बन सकता है। यदि हम क्रोध और घृणा को हरा सकें तो हम हत्या को भी हरा पाएंगे। पहाड़ी उपदेश से जो मूल सबक हम ले सकते हैं वह यह है कि पाप करने का कारण भी पाप है।

दिखाया गया क्रोध (आयत 22ख)

आयत 22 के बीच, यीशु क्रोध की भावना से क्रोध की अभिव्यक्ति में चला गया ''और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा।'' ''निकम्मा'' का अनुवाद यूनानी शब्द *raca* (देखें KJV) से लिया गया है। डल्ब्यू. ई. वाइन ने कहा कि ''राका'' [इब्रानी] की तरह ही एक अरामी शब्द है ...। यह अत्यधिक अपमान का शब्द था, जो नैतिक के बजाय, बौद्धिक ''खालीपन का संकेत देता था।''[14] कुछ अनुवादों में इस शब्द का सामान्य ढंग अपनाया गया है। NCV में ''बदनामी करना'' है। अन्य अनुवादों में ठेठ अर्थों का सुझाव है। मेकोर्ड में ''खाली दिमाग'' है, जबकि NLT में ''मूर्ख'' है।

हो सकता है कि राका शब्द में इतना अपमान न हो जितना इसे कहने के ढंग में कई शब्द जो अपने आप में इतने अपमानित न हों पर वैरभाव भरे ढंग से उनका इस्तेमाल अन्दर तक घाव कर देता हो। उस समय के तिरस्कार के लहज़े में बोले गए शब्द राका पर विचार करें। आप जहां भी रहते हों वहां पर दूसरों को नीचा दिखाने और अपमानित करने के शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। (आप जानते हैं कि वे शब्द क्या हैं, या नहीं जानते?) एक विवेकी मसीही ऐसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता पर सांसारिक सोच वाला व्यक्ति करता है।

यीशु के अनुसार जो अपने भाई को राका कहते ''वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा।'' ''महासभा'' यूनानी शब्द *sunedrion* से लिया गया है, जिसे अंग्रेजी में आमतौर पर ''सन्हेद्रिन'' पढ़ा जाता है। इस शब्द का इस्तेमाल कभी-कभी सामान्य ढंग में किया जाता था (देखें मत्ती 10:17) पर आमतौर पर ''71 सदस्यों वाली यरूशलेम की महासभा'' के लिए होता था। ''... इस कचहरी के सामने बड़े मामले ही लाए जाते थे।''[15] कई देशों में स्थानीय अदालतों के साथ-साथ राष्ट्रीय अदालतें होती हैं। अमेरिका में उस अदालत को सुप्रीम कोर्ट कहा जाता है। बेशक, कोई भी किसी भाई के अपमान के लिए किसी का यरूशलेम की सर्वोच्च नयायालय (महासभा) के सामने नहीं ले जाएगा तो फिर यीशु ने किसी भाई के साथ क्रोधित होने की गंभीरता को समझने के लिए प्रतीकात्मक ढंग में आम बोले जाने वाले शब्दों का इस्तेमाल करना जारी रखा। स्थानीय अदालत में महासभा तक जाने में वचन पाठ में गंभीरता बढ़ती जाती है। मतलब यह कि क्रोध मन में होने से क्रोध को दिखाने के परिणाम गंभीर हैं।

मुझे शायद उस बाहरी तर्क की बात करनी चाहिए जो मैंने देखा है। कोई कहता है, ''यदि

किसी भाई से घृणा करना उसकी हत्या करने जितना ही बुरा है, यदि मैं अपने भाई से घृणा करता हूं तो क्यों न मैं आगे बढ़कर उसको मार ही डालूं। मेरा पाप तो परमेश्वर की दृष्टि में उतना ही रहेगा।'' बेशक, कोई पाठक ऐसा बचकाना तर्क नहीं देगा पर कुछ बातों पर ध्यान देना गलत नहीं होगा। व्यावहारिक दृष्टिकोण से कई कारणों से क्रोध को मन में रखने से कहीं बढ़कर क्रोध को दिखाना (अपमानजनक बातों और/या हत्या से) और भी बुरा है। मैं दो कारण बताऊंगा (1) आपको चाहे किसी भाई पर क्रोध भी हो तौ भी उसका अपमान या उसकी हत्या न करें क्योंकि इन कामों के कारण मन फिराना और कठिन हो जाएगा (मन फिराव में वापसी शामिल है)। यदि आप किसी दूसरे के लिए कोई बुरी बात मुंह से नहीं निकालते, तो आप को उसके पास जाकर उससे सुलह कर लेनी चाहिए (देखें आयतें 23, 24)। यदि आप किसी की हत्या कर देते हैं तो उसे जिलाया नहीं जा सकता। (2) यदि आप किसी भाई पर क्रोधित भी हैं तब भी आप उसकी हत्या न करें, क्योंकि इसके परिणाम और भी बुरे हैं। यदि आप के मन में घृणा या क्रोध है तो आपको परमेश्वर के सामने जवाब देना पड़ेगा। यदि आप हत्या का देते हैं तो आप को परमेश्वर के साथ-साथ सोना सांसारिक अदालत को भी जवाब देना पड़ेगा। यीशु की बढ़ती सख्ती कानूनी ''कब'' बचाव के मार्ग देना नहीं बल्कि हमें समझाना था कि यदि हम अपने भाई से क्रोध या घृणा करते हैं तो हमारे लिए अपने दिल और दिमाग से नकारात्मक विचारों को निकाल देना आवश्यक है।

यीशु ने व्यक्त किए जाने वाले क्रोध का एक और उदाहरण दिया, उसने आगे कहा, ''और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।'' फिर से अपराध और दण्ड दोनों में सख्ती दिखाई देती है। ''मूर्ख'' का अनुवाद *moros* से किया गया है, जिसे हमें अंग्रेजी भाषा का ''moron'' (मंद बुद्धि) शब्द मिला है। हम शब्द का ''अर्थ मुख्यतया मतिमंद, ढीला है ...; इस कारण 'मूर्ख, बेसमझ' है ... ; यहां इस शब्द का अर्थ नैतिक रूप में बेकार बदमाश है।'' यह *राका* से बड़ी बदनामी है क्योंकि यह शब्द व्यक्ति के दिमाग का मज़ाक उड़ाता और उसे मूर्ख कहता है जबकि *moros* उसके दिल और चरित्र का मज़ाक उड़ाता है।[16] शास्त्रियों और फरीसियों को डांटने (मत्ती 23:17, 19) और मूर्ख कुंआरियों के वजन के लिए यीशु ने *moros* का ही इस्तेमाल (मत्ती 25:3) किया। यह शब्द व्यक्ति की आत्मिक स्थिति का वर्णन है। यीशु ऐसा निर्णय देने के लिए योग्य था।[17] पर आप और मैं नहीं है।

यदि मन में क्रोध और घृणा रखने का अर्थ ''विचार की हत्या'' है तो एक-दूसरे से अपमानजनक भाषा में बात करना ''जीभ की हत्या'' है।[18] जीभ से हम किसी के आत्म विश्वास की हत्या कर सकते हैं। जीभ से किसी के अच्छे नाम की हत्या हो सकती है।

मसीही व्यक्ति की एक खूबी यह है कि वह दूसरे के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करता है। वह अपमानपूर्वक लोगों के साथ भी आदर से पेश आता है। उसने यह कहां से सीखा? हम में से कइयों ने यह मसीही परिवारों में सीखा है। यदि आप माता-पिता, दादा/नाना या दादी/नानी हैं तो आप इस बात पर ज़ोर दें कि आपके घर में दूसरे के साथ आदरपूर्वक व्यवहार हो। घटिया, घृणित शब्दों को मसीही घर में कोई स्थान नहीं है। यीशु ने कहा, जो दूसरे को ''अरे मूर्ख'' कहता है, ''वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।'' ''नरक'' मिश्रित यूनानी शब्द *gehenna* से लिया गया है, जिस का अर्थ ''हिन्नोम की तराई'' है।[19] इस तराई में अहाज़ राजा और अन्य

लोगों ने झूठे देवताओं के सामने अपने बच्चों की बलि दी थी (2 राजाओं 16:3; 2 इतिहास 28:3)।[20] राजा बनकर योशियाह ने तराई को दूषित कर दिया (2 राजाओं 23:10)। यह गंदगी और अपराधियों की लाशों के कूड़ा फैंकने का स्थान था (देखें यिर्मयाह 7:31-33)। परम्परा के अनुसार पहली सदी में इसका इस्तेमाल कूड़े के डंपिंग ग्राउंड के रूप में किया जाता था, जिसमें से आग की लपटें सुलगती रहती थी।[21] यीशु के रूपक में जो अपने मन में किसी दूसरे को ''अरे मूर्ख'' कहने तक क्रोध और घृणा को सुलगने देता है। वह धुएं और लगातार जलती रहने वाली आग की लपटों में फैंके जाने के योग्य है।

यीशु ने अपने पाठकों को यह समझाने की उम्मीद की कि उसके मन में शारीरिक दण्ड से गंभीर कुछ था। उसके समय तक *गेहन्ना* शब्द का अर्थ दुष्ट लोगों के अनन्त निवास के सामान्य विवरण बन चुका था, जिसे हम ''नरक'' कहते हैं (मत्ती 10:28; 23:33)। प्रकाशितवाक्य 21:8 में परमेश्वर ने कहा कि हत्यारों को ''आग और गंधक की झील'' में फैंका जाएगा, ''यह दूसरी मृत्यु है।'' और यीशु ने कहा कि मन में रखा क्रोध और दिखाया गया क्रोध शारीरिक हत्या जितने ही बुरे हैं।

किसी ने कहा, ''मैं ध्यान रखूंगा कि कसी को *'राक्का'* या *'मूर्ख'* न कहूं। सो मैं सही रहूंगा।'' इस प्रकार से तर्क देने वाला जो भी हो वह समझा नहीं है कि यीशु क्या कह रहा था। ''*राक्का*'' और ''मूर्ख'' तो उसके समय में केवल अपमान के शब्दों के उदाहरण थे। मत्ती 5:21, 22 के संदेश का सम्बन्ध हमें अपने मनों में से क्रोध के विचारों को और क्रोध की बातों को, *वे जो भी* हों, अपने होंठों से दूर रखने की हर कोशिश करने से है।

जल्दी से सुलह करने की आवश्यकता (5:23-26)

यीशु को समझ थी कि हमारी मंशा अच्छी से अच्छी होने के बावजूद हम कई बार अपने विचारों या अपनी जीभों को वश में नहीं रखते हैं (देखें याकूब 3:8)। ऐसा होने पर हमें क्या करना चाहिए? इसका उत्तर यह है कि हम परमेश्वर और मनुष्य के साथ मामले को सुधारने में समय न गंवाएं। हमारे वचन पाठ की अन्तिम दो आयतें जल्दी से मेल कर लेने की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

भाई के साथ (आयतें 23, 24)

आयत 23 में हम पढ़ते हैं ''इस लिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरी और से कुछ विरोध है, ...।'' जैसा कि पिछले पाठ में ध्यान दिया गया था, पहाड़ी उपदेश उस समय दिया गया था जबकि हमारे पुराना नियम लागू था और यह उन लोगों को बताया गया था जो पुराने नियम की बातों से परिचित थे। इसलिए आप कल्पना करें कि आप एक यहूदी हैं जो यीशु को सुन रहे हैं। निम्न बातों की कल्पना करें। आप मन्दिर में एक भेंट लाते हैं, जो संभवतया बलिदान किए जाने के लिए एक मेमना है। आप उस मेमने को अन्यजातियों के आंगन में से स्त्रियों के आंगन में से इस्राएल के आंगन में ले जाते हैं। जानवर भेंट करने की आम बात उस जन्तु के सिर पर हाथ रखते हुए अपने पापों को रटना होता था, जो सांकेतिक तौर पर बलिदान किए जाने वाले पशु पर उन पापों को डाल देना होता था। ऐसा करते

हुए आप के काम में किसी भाई की आवाज़ पड़ती है जिसे किसी ने जिसे आपने कहा दुखी विचार (या कम से कम इस बात से आहत हुआ कि उसे लगा कि आप ने कुछ कहा है[22])।

ऐसा होने पर यीशु ने कहा, ''पहिले अपने भाई से मेल कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा'' (आयत 24क)। वेदी के सामने [याजक या लेवी की देखरेख में] ''मेल-मिलाप कर ले''? मेल-मिलाप करने के लिए हमें क्या करना होगा? एल्बर्ट बार्नस ने कई सुझाव दिए हैं:

> यदि तुम ने उसका नुकसान किया है, तो क्षतिपूर्ति कर दो। यदि तुम ने उसका कर्ज देना है तो चुका दो। यदि तुमने उसके चरित्र को उछाला है, तो गलती मान कर क्षमा मांग लो। यदि उसे कुछ गलतफ़हमी है, यदि तुम्हारा व्यवहार ऐसा है, जिनसे संदेह हो गया है कि तुम ने उसे दुख पहुंचाया, तो उसे साफ-साफ बता दो। जो कुछ कर सकते हो करो, और जो कुछ करना चाहिए, *वह करो* ताकि मामला सुलझ जाए।[23]

हमारे वचन पाठ में यीशु ने गलती करने वाले (वास्तविक या काल्पनिक) का उदाहरण दिया। बाद में एक अवसर पर उसने पीड़ित को निर्देश दिए: ''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा। यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया'' (18:15)। गलती करने वाला अपने भाई के पास जाए और पीड़ित अपने भाई के पास जाए। यदि दोनों यह करते हैं जो उन्हें करना चाहिए तो दोनों में ''मधुर मिलन'' हो सकता है, जिसे लैरी कैल्विन ने ''प्रेम की टक्कर'' नाम दिया है।[24] दोनों में से एक यदि वह नहीं करता जो उसे करना चाहिए तो क्या होगा? इससे दूसरे को बहाना नहीं मिलता। आप यह नहीं कह सकते, ''हां, पहले उसे मेरे पास आना चाहिए।'' यीशु ने कहा कि आप को ''जाकर'' अपने भाई या बहन के साथ ''मेल-मिलाप'' के लिए जो भी आवश्यक हो, आपको ही करना चाहिए।

यह कर लेने के बाद यीशु ने कहा, ''तब जाकर अपनी भेंट चढ़ा'' (5:24ख)। इन शब्दों को नये नियम के व्यवहारों में लागू करना कठिन नहीं है। आराधना के लिए आकर और परमेश्वर से पापों की क्षमा मांगने के लिए सिर झुकाने पर यदि आपको ध्यान आता कि किसी भाई या किसी बहन के मन में आपके विरुद्ध कोई बात है तो प्रार्थना करना बन्द कर दें और ''जाकर पहले अपने भाई-बहन से मेल मिलाप कर लें।'' फिर वापस आकर प्रार्थना पूरी करें। प्रभु भोज लेते हुए यदि आप के ध्यान मे आता है कि आपने किसी भाई या किसी बहन का पाप किया है तो भवन में से निकलकर उस भाई या बहन से मेल-मिलाप करें। फिर वापस आकर प्रभु और अन्य मसीही लोगों के साथ अपनी सहभागिता को पूरा कर लें।

वर्षों से मैंने विभिन्न कारणों से लोगों को आराधना सेवा में से उठकर जाते हुए देखा है, जिनमें कई कारण तो मानने वाले हैं, जबकि कई संदेहास्पद: दवाई लेने, शरारती बच्चों को बाहर ले जाना, बीमार हो जाना, किसी से मिलने की मजबूरी और सरमन मनपसन्द न होना। जहां तक मैं जानता हूं मैंने कभी किसी भाई या बहन को मनाने के लिए उठकर जाते नहीं देखा। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने इसे ''आमतौर पर नज़रअंदाज कर दिया जाने वाला फर्ज'' कहा है।[25]

आयतें 23 और 24 का स्पष्ट संदेश किसी पीड़ित भाई के साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता है और संदेश भी है जिन पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए चर्च जाना परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा को मानने का विकल्प नहीं हो सकता (1 शमुएल 15:22

से तुलना)। इन आयतों में एक और महत्वपूर्ण सबक है कि किसी भाई के साथ हमारा संबंध परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को प्रभावित कर सकता है। यूहन्ना ने लिखा ''यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता'' (1 यूहन्ना 4:20)।

किसी शत्रु के साथ (आयतें 25, 26)

हमारे वचन पाठ की आयतें 25 और 26 में यीशु ने तुरन्त समाधान की आवश्यकता का दूसरा उदाहरण दिया। इन आयतों में उसने आयत 22 में इस्तेमाल किए गए कानूनी रूपक का उत्तर दिया। उसने आरम्भ किया, ''तू अपने मुद्दई के साथ शीघ्र मेल कर ले'' (आयत 25क)। ''मुद्दई'' शब्द *antidikos* से लिया गया है, इस संदर्भ में अर्थ ''मुकदमे में विरोधी'' है।[26] इस उदाहरण में मुकदमा न उतारे गए कर्ज का है या कम से कम उस कर्ज का जो विरोधी को लगता है कि उतारा नहीं गया (देखें आयत 26)।

यीशु ने कहा, ''जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उससे शीघ्र मेल कर ले; कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए'' (आयत 25क, ख)। मूल यूनानी में है, ''विरोधी के साथ निपटा लें।''[27] अभिप्राय यह है कि सद्भाव देते उसके सद्भाव की इच्छा करो।[28] ये शब्द मुख्यतया उसके साथ मामले को निपटाने के लिए हैं (देखें NIV), पर शत्रु को मित्र बना लेना अच्छा लक्ष्य है (देखें आयत 44)।[29] आपका विरोधी हो सकता है कि आप का सबसे अच्छा मित्र न बन सके, पर आप को उसके साथ सुलह करने की कोशिश करनी चाहिए।

''मार्ग ही में'' का अर्थ ''अदालत के रास्ते में ही'' कोई छोटा कस्बा हो तो ऐसा ही हो सकता है। दोनों पक्षों के अदालत में चलकर न जाते हुए वे एक ही सड़क पर से गुज़रते हैं। ऐसा ही हुआ या नहीं, पर विचार यह है कि पेशी का समय निकट आने पर, आरोपी को चाहिए कि अदालत के बाहर ही मामले को सुलझाने के अपने प्रयासों को बढ़ा दें।

आयत में मुख्य शब्द ''झटपट'' है। किसी के साथ (चाहे वह भाई हो या विरोधी) प्रतीक्षा मत कर। झिझक मत; तुरन्त सुलह कर ले। यदि तेरे और किसी के बीच में बुरी भावनाएं आ जाएं तो जितनी जल्दी हो सके ''दोस्ती कर लें।'' यीशु ने कहा कि मामले को जल्द निपटाना चाहिए, ''कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए'' (आयत 25ग)। ''हाकिम'' अदालत में दण्ड देने के लिए ठहराया गया व्यक्ति है। उस ज़माने में लोगों के कर्ज़ न चुका पाने की स्थिति में कैद में डाला जा सकता था।

यीशु ने कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा'' (आयत 26)। ''कौड़ी-कौड़ी'' सबसे छोटा रोमी सिक्का *quadrans* था।[30] कर्ज़ न चुका पाने की दशा में कैद में डाले गए लोगों को पाई-पाई चुकाने तक चाहे वह परिवार के द्वारा हो, मित्रों या किसी और के द्वारा, जेल में ही रहना पड़ता था।[31]

25 और 26 आयतों से शायद हम व्यावहारिक सबक ले सकते हैं कि जहां तक हो सके

कचहरी से दूर रहें। एक और अवसर पर यीशु ने और अधिक प्रासंगिकता वाले ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया (देखें लूका 12:57-59)। कुछ क ने तो 25 और 26 आयतों में रूपक को देखा है। हम सभी न्याय की अदालत की ओर जीवन के मार्ग पर जा रहे हैं। हमारे साथ उसी सड़क पर वे लोग हैं, जिनका हमारे साथ झगड़ा है। हमें इस जीवन के खत्म होने (देखें याकूब 4:14) और अवसर के हाथ से निकल जाने से पहले झगड़ों को तुरन्त निपटा लेना चाहिए।

उदाहरण में नाटकीय उछालों पर ध्यान न भटकने दें। यीशु की बात को समझना आसान है: परिस्थिति चाहे जो भी हो, जब आप किसी के साथ नहीं चल रहे हैं तो ''झटपट'' सुलह कर लें। *झटपट* सुलह कर लें, क्या यह सच नहीं है कि कोई गलतफ़हमी होने पर कई लोग दूसरे के पास जाने में देर लगाते हैं? नाराज़गी की कोई सम्भावना होने पर हम जाना टाल देते हैं। नतीजा यह होता है कि बात और बिगड़ जाती है और दरार इतनी बढ़ जाती है कि उसे भरना लगभग असम्भव हो जाता है। आप को मालूम है कि ऐसा ही होता है। परन्तु यदि हम *झटपट* काम करें तो मामला आमतौर पर सुलझ सकता है।[32]

बलूत के पेड़ की कल्पना करें। उस पेड़ से बंजुफल गिरते हैं और उन में से कुछ उग जाते हैं। पौधे तो छोटे होते हैं, जिन्हें भूमि में से निकाला जा सकता है; पर यदि उन्हें निकाला न जाए तो वे ही बढ़कर पेड़ बन जाएंगे। पेड़ बन जाने के बाद आप उन्हें उखाड़ नहीं सकते। उन्हें केवल काटा जा सकता है, ज़मीन घेरने के लिए ठूंठ छोड़कर और ज़मीन में उसकी विशाल जड़ छोड़कर जब कोई नाराजगी हो जाए तो कड़वाहट को जड़ पकड़ने का मौका न दें। इसके बजाय हो सके तो तुरन्त दूसरे पक्ष के पास जाएं और गिले शिकवे वैरभाव को दूर करें। ''अपने मुद्दई के साथ *झटपट* मेल-मिलाप कर लें।''

सारांश

छठी आज्ञा थी, ''तू हत्या न करना''; पर यीशु ने कहा कि दूसरों के लिए अपने मन में बुरी भावनाएं भी न रखना और न बुरी बात अपने होंठों पर लाना। इसके अलावा यदि आप किसी से अलग हो जाते हैं तो आपको जितनी जल्दी हो सके उससे मेल कर लेना चाहिए। कया आप इस अध्ययन को करते हुए अपने मन और कार्यों की जांच कर रहे थे? क्या हम में से कोई कह सकता है कि हमने कभी मन में बुरी भावनाएं नहीं रखी हैं; कि हमने कभी नीच, कमीनी बातें नहीं की हैं; कि हम जल्दी से उसके पास सुलह के लिए चले गए जिसे हमने दुख पहुंचाया?

हमारे वचन पाठ में यीशु ने स्पष्ट किया कि अपने भाई और बहनों के साथ आप के सम्बन्ध परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध को प्रभावित कर सकते हैं। परमेश्वर के साथ आप का सम्बन्ध कैसा है? क्या आपके और परमेश्वर के बीच में कोई रुकावट लगती है? यह रुकावट शायद इसलिए है क्योंकि मसीह के आपके और आपके भाई या बहन के बीच ... या परिवार के सदस्य के बीच ... या पड़ोसी के बीच ... या काम की जगह या स्कूल में किसी के बीच कोई रुकावट है। यदि हां तो जाकर सुलह कर लें। तब जाकर अपने जीवन को अपने स्वर्गीय पिता के सामने भेंट करें।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), १३०. [2]KJV में ''पुराने समय के लोगों *द्वारा* कहा गया था'' है। अनुवादित शब्द ''पूर्वकाल के लोगों'' या ''पुराने लोगों'' का सम्प्रदान कारक में है, जिसके लिए पूर्वसर्ग आवश्यक है। यूनानी धर्मशास्त्र में कोई पूर्वसर्ग नहीं है, जिस कारण पूर्वसर्ग लगाना आना आवश्यक है। KJV के अनुवादकों ने ''के द्वारा'' शब्द जोड़ा जबकि अन्य अनुवादकों ''के लिए'' या इसके समान शब्द डाला। कोई भी अनुवाद स्वीकार्य है। यदि ''के द्वारा'' शब्द का इस्तेमाल होता है तो ''पूर्व काल के लोग'' पुराने ज़माने के यहूदी गुरु थे। [3]डल्ब्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 342. [4]*द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. (2001), एस. वी. ''मर्डर।'' [5]वाइन, 337. [6]रोमी कानून के अनुसार यहूदी अदालत मृत्यु दण्ड नहीं दे सकती थी रोमियों ने वह अधिकार अपने पास सुरक्षित रखा था। परन्तु यहूदी अदालतों को हत्या के आरोपियों पर मुकदमा करने की अनुमति थी। [7]इस संदर्भ में ''भाई'' का इस्तेमाल पुरुष और स्त्री दोनों के लिए सामान्य अर्थ में किया गया है। [8]वाइन, 26–27. [9]बार्कले, 135–36.[10]विलियम एवन्स, ''राथ.'' *दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स, ओर्र (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 5:3113.

[11]कइयों का मानना है कि ''यह शब्द प्रतिलिपियां बनाने वालों द्वारा नियम की कठोरता को आसान बनाने के लिए जोड़ा गया था'' (ब्रूस एम. मेजगेर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 2000], 13)। [12]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* (ऑस्टिन टैक्सस: फर्म फांउडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 61 से लिया गया। [13]फ्रैंक एल. कोक्स, *सरमन नोट्स ऑन दि समरन ऑन दि माउंट* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1955), 13. मत्ती 15:19 में यीशु ने ''बुरे विचारों'' और ''हत्या'' दोनों को जोड़ दिया। [14]वाइन, 504. [15]वही., 132. [16]वही., 246. [17]यीशु लोगों के मनों को जानता था (देखें यूहन्ना 2:25) और वह देह में परमेश्वर था (मत्ती 1:23; यूहन्ना 1:14)। [18]कोक्स, 13. [19]यह तराई ''बिन–हिनोम की तराई'' भी कहलाती है। जिसका अर्थ ''हिनोम के पुत्र की तराई'' है, जिसका उल्लेख यहोशू 15:8ऱ 18:16; नहेम्याह 11:30 में है। [20]''आग में से निकलना'' का अर्थ बलिदान के रूप में आग में डालना है। इस चौंकाने वाली प्रथा का सजीव चित्रण अल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन दि न्यू टैस्टामेंट: मत्ती एंड मरकुस,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 53 में दी गई है।

[21]डी. ए. करसन, ''मैथ्यू,'' *दि एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफेरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 149. [22]ये आयत संकेत देती है, पर बताती नहीं है कि बलिदान करने वाला दोषी है। यह अनावश्यक बात है कि यदि कोई दोषी नहीं है तो वह उस भाई के साथ जिसे दुख पहुंचा है उससे मेल करने की कोशिश फिर भी करे। [23]बार्नस, 54. [24]लैरी कैल्विन, *दि पावर जोन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 64–66 से लिया गया। [25]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 2006), 55. [26]वाइन, 15. KJV ''व्यवस्था का विरोधी'' के बजाय ''विरोधी'' है। [27]अलफ्रेड मार्शल, *द इंटरलीनियर ग्रीक–इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* द्वितीय संस्क. (लंदन: समुएल बैग्स्टर एंड सन्स, 1958), 12. [28]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गास्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गास्पल एडवोकेट कं., 1976), 137. [29]अब्राहम लिंकन ने कहा है, ''शत्रु का विनाश करने का बेहतरीन ढंग उसे मित्र बना लेना है'' (http://www.quoteworld.org/qoutes/8335; इंटरनेट ; 30 मई 2008 को देखा गया)। [30]*कौड़ी दीनार* के साथ 1/64 भाग को कहा गया है। कौड़ियां निर्धन विधवा द्वारा मन्दिर के भण्डार में डाले जाने वाली राशि जितनी थी (मरकुस 12:42)। (वाइन, 227।) [31]ध्यान दें कि आयत 26 ''विवरणात्मक बनावट का एक भाग है और परगेटरी को किसी प्रकार उचित नहीं ठहराता'' (कारसन, 150)। [32]यदि हम जल्दी में भी जाएं तो भी कोई न कोई मत्ता रहता है; पर हमें यह जानना आवश्यक है कि क्या हमने वह किया है जो हम कर सकते हैं (देखें रोमियों 12:18)।